

मेरा नया बचपन

सुभद्रा कुमारी चौहान



कवि परिचय :

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1903 ई. में नागपंचमी के दिन प्रयाग निहलपुर मुहल में हुआ। उनके पिता थे ठाकुर रामनाथ सिंह। उनकी देखरेख में सुभद्राकुमारी की प्रारंभिक शिक्षा प्रयाग में हुई। सन् 1919 ई. में खंडवा निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान से उनका विवाह हुआ था। राष्ट्रीय आन्दोलन में उद्बोधित होकर सुभद्राकुमारी अपने पति के साथ सत्याग्रह में हिस्सा लेने लगीं। इसलिए कई बार उन्हें जेल जाना पड़ा। देश स्वतंत्र होने के बाद वे मध्यप्रदेश विधानसभा की सदस्या चुनी गईं। साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्रों में उन्हें राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी से विशेष प्रोत्साहन मिला था। 12 फरवरी 1948 ई. को मोटर दुर्घटना से उनका देहांत हो गया।

सुभद्राकुमारी कवयित्री और कहानीकार-दोनों ही थीं। अपनी कविता में राष्ट्रप्रेम की ओजस्विता और मानवीय भावनाओं का सहज रूप बड़ी ही सुन्दरता के साथ व्यक्त होता है। 'झाँसी की रानी' कविता किसी समय हिन्दी पाठकों की जवानों पर गुँजती रहती थी। इनकी रचनाएँ मुकुल, बिखरे, मोती, उन्मादिनी, त्रिधाराएँ, सभा का खेल और 'सीधे-साधे चित्र' हैं। इनमें 'मुकुल' उनकी 39 कविताओं का संग्रह है। इसी कविता-पुस्तक पर उन्हें पुरस्कार मिला है।

भाव-बोध :

'मेरा नया बचपन' कविता चौहानजी के बचपन-संबंधी मनोभावों की एक झलक है। राष्ट्रीय कविताओं के अतिरिक्त सुभद्रा की वात्सल्य संबंधी कुछ कविताएँ भी अपनी स्वाभाविकता में अप्रतिम हैं। 'मेरा नया बचपन' कविता में कवयित्री ने अपने बचपन की

याद की है । इसमें उनका मातृहृदय सजग हो उठा है । बचपन की सरल, मधुर स्मृतियाँ आनन्द का अतुलित भंडार होती हैं । कवयित्री ने अपनी बिटिया के बचपन की अठखेलियों और शरारतों में अपने ही बचपन की झलक देखी । उन्हें लगा कि उनका बचपन फिर से लौट आया है । वस्तुतः नारी-हृदय मातृत्व पाकर ही गौरवान्वित होता है । सुभद्राजी पूर्ण माता हैं ।

बार-बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी,
गया, ले गया तू, जीवन की,
सबसे मस्त खुशी मेरी ।

चिंता रहित खेलना खाना,
वह फिरना निर्भय स्वच्छंद,
कैसे भूला जा सकता है,
बचपन का अतुलित आनंद ।

रोना और मचल जाना भी,
क्या आनंद दिखलाते थे,
बड़े-बड़े मोती-से आँसू,
जयमाला पहनाते थे ।

मैं रोई, माँ काम छोड़कर
आई, मुझको उठा लिया,
झाड़-पोंछकर चूम-चूमकर,
गीले गालों को सुखा दिया ।

आ जा बचपन ! एक बार फिर
दे दे अपनी निर्मल शांति,
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली
वह अपनी प्राकृत विश्रान्ति ।

वह भोली-सी मधुर सरलता
वह प्यारा जीवन निष्पाप,
क्या फिर आकर मिटा सकेगा
तू मेरे मन का संताप ?

मैं बचपन को बुला रही थी,
बोल उठी बिटिया मेरी,
नंदन-वन-सी फूल उठी,
यह छोटी-सी कुटिया मेरी ।

माँ ओ ! कहकर बुला रही थी,
मिट्टी खाकर आई थी,
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में,
मुझे खिलाने आई थी ।

मैंने पूछा-यह क्या लाई ?
बोल उठी वह - माँ खाओ,
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से,
मैंने कहा - तुम ही खाओ ।

पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन बेटी बन आया,
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर,
मुझमें नव-जीवन आया ।

मैं भी उसके साथ खेलती,
खाती हूँ, तुतलाती हूँ,
मिलकर उसके साथ स्वयं,
मैं भी बच्ची बन जाती हूँ ।

जिसे खोजती थी बरसों से,
अब जाकर उसको पाया,
भाग गया था मुझे छोड़कर,
वह बचपन फिर से आया ।

शब्दार्थ

याद - स्मरण । मस्त - प्रसन्न, आनंदित । निर्भय - बिना डर के । चिंता रहित -
चिंता शून्य । स्वच्छंद- आज़ाद, स्वाधीन, स्वतंत्र । अतुलित - अतुलनीय, अपार, बेजोड़ ।
मचल जाना - आग्रह, हठ करना । आँसू - अश्रु । गीला - भीगा हुआ । व्याकुल - बेचैन ।
प्राकृत विश्रांति - स्वाभाविक सुख चैन । निष्पाप - पापरहित, निष्कलंक । संताप - गहरी
पीड़ा, दुःख । नंदनवन - देवताओं का वन । कुटिया - कुटीर, झोंपड़ी । मिट्टी - धूलि,
भस्म । प्रफुल्लित - बहुत खुश, प्रसन्न । मंजुल - सुन्दर, मन को लुभानेवाली । नव-
जीवन - नया जीवन । तुतलाना - तुतलाकर बोलना । स्वयं - खुद । बरसों - सालों ।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

- (क) कवयित्री ने बचपन को 'अतुलित आनंद देनेवाले' क्यों कहा है ?
- (ख) बचपन के बारे में कवयित्री ने क्या वर्णन किया है ?
- (ग) बच्ची के रोने पर माँ ने उसे कैसे चुप कराया ?
- (घ) कवयित्री बचपन को क्यों बार-बार बुलाती हैं ?
- (ङ) बचपन को बुलाते समय क्या हुआ ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

- (क) 'मेरा नया बचपन' कविता किसने लिखी है ?
- (ख) कवयित्री को बार-बार किसकी याद आती है ?
- (ग) किस समय का अतुलित आनंद भूला नहीं जा सकता है ?
- (घ) कवयित्री को बचपन में किस प्रकार की जयमाला पहनाते थे ?
- (ङ) माँ ने गीले गालों को कैसे सुखा दिया ?
- (च) कवयित्री किसलिए बचपन को फिर एक बार बुलाती है ?
- (छ) कवयित्री किसलिए शंका प्रकट करती है ?
- (ज) कवयित्री की छोटी-सी कुटिया कैसे नन्दन वन-सी फूल उठी ?
- (झ) कवयित्री की बिटिया क्यों माँ के पास आई थी ?
- (ञ) कवयित्री ने अपना खोया बचपन किस प्रकार पाया ?
- (ट) कवयित्री किसे बरसों से खोजती थी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए :

(क) कवयित्री को बार-बार किसकी याद आती है ?

(i) बुढ़ापा

(ii) बचपन

(iii) शैशव

(iv) यौवन

(ख) बचपन का कौन-सा आनंद भुला नहीं जा सकता ?

(i) सुख

(ii) अप्रतिम

(iii) अतुलित

(iv) असीम

(ग) जब बच्ची रोती थी तब कौन काम छोड़कर आ जाती थी ?

(i) माँ

(ii) बहन

(iii) नानी

(iv) आया

(घ) बिटिया क्या खाकर आई थी ?

(i) रोटी

(ii) पान

(iii) मिट्टी

(iv) मिठाई

(ड) बचपन क्या बनकर कवयित्री को फिर से प्राप्त हुआ ?

(i) बिल्ली

(ii) कुत्ता

(iii) बेटा

(iv) बेटी

भाषा - ज्ञान

1. इन विशेषण तथा संज्ञा शब्दों को जोड़िए :

विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा
मधुर	विश्रान्ति	मस्त	कुटिया
व्याकुल	आँसू	मंजुल	खुशी
मोती-से	हृदय	छोटी-सी	आनंद
प्राकृत	स्मृति	अतुलित	मूर्ति

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

खुशी, हँसना, मधुर, जीवन, निश्चित, निर्भय, बड़े, सूखा, भयभीत, कुटिया, नव, प्यारा, पाप, निष्पाप, सरलता, बचपन, निर्मल, अपना, पाया, हर्ष ।

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

निर्भय, स्वच्छन्द, जय, माँ, व्यथा, फूल, कुटिया, वन

4. निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों को बदलिए ।

(क) तू गया, तू ले गया । (भविष्यत काल में)

(ख) मेरे मन का दुःख वह आकर मिटाएगा । (भूतकाल में)

(ग) माँ काम छोड़कर आई और मुझे गोद में उठा लिया । (वर्तमान काल में)

(घ) मैं बचपन को बुला रही थी । (वर्तमान काल में)

(ङ) मुझे खिलाने आई थी । (भविष्यत काल में)

गृहकार्य :

अपने बचपन की किसी एक रोचक घटना अपने साथियों को सुनाइए ।

